कविता की किताब

संगीता कुमारी

[redacted]

पूर बक्शी

सावित्री संगीत ममता कंचन
हम सब करते नाटक का मंचन

रीना रानी करे मनमानी

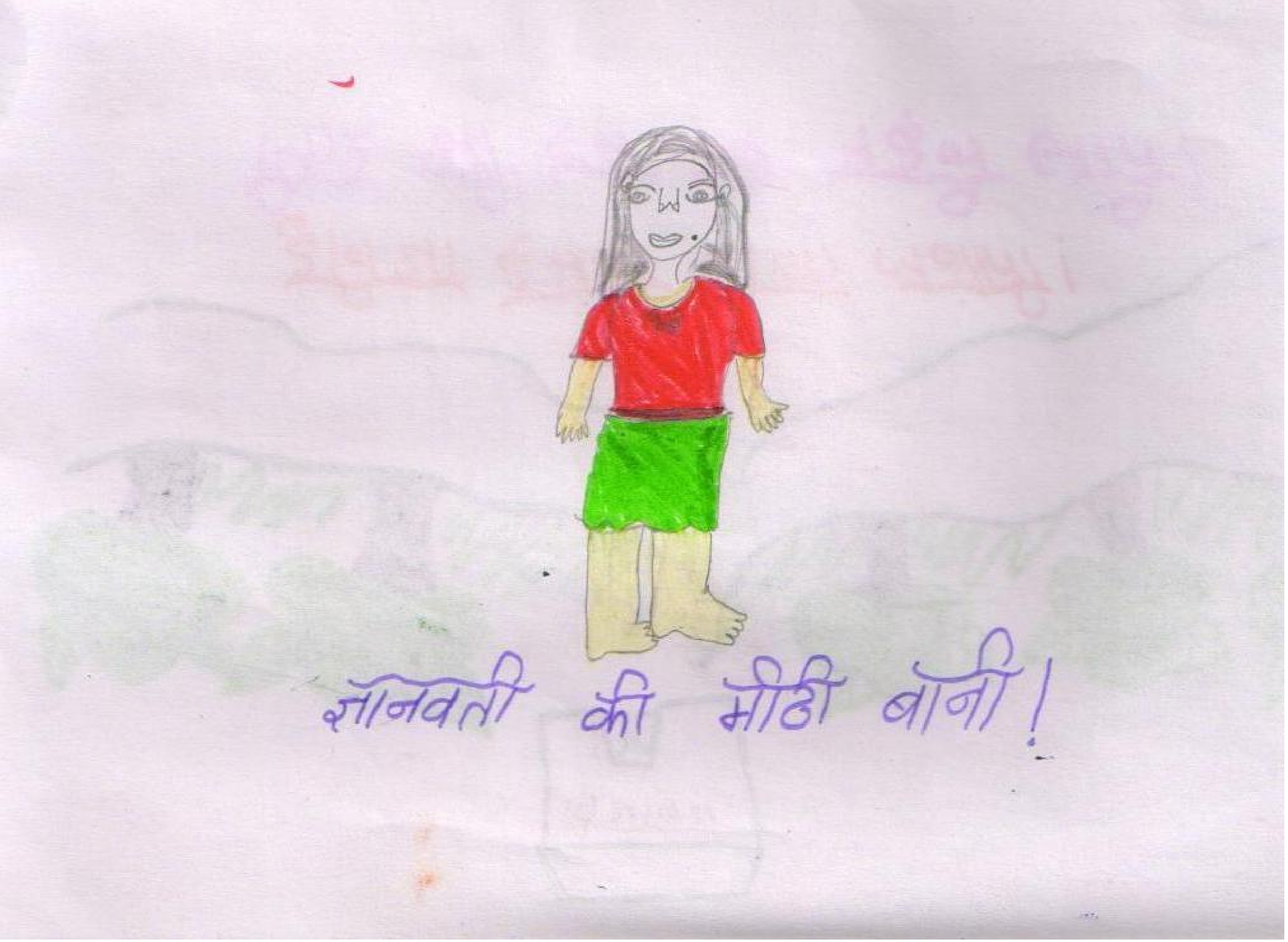

ज्ञानवती की मीठी बानी!

दुनिया हमको रोक लगाती!
फिर भी हम सब पढ़ने जाते।

हम बढ़ने काम करे
दुनिया हमारी सम्मान करे

लोकमित्र ने काम किया
हम सबको सम्मान दिया।

हम सब बच्चे अच्छे है

काम करते सच्चे है।

हम सब हिल-मिल रहते है!

जोभी दीदी सवाल चलती हम सब उसमें ध्यान लगाते है। सबको दीदी ध्यान दिलाती है।

कभी नही पर हाथ उठती सब दीदी पारी
है। सच्चे मन कि न्यारी है। हम सब को
दींदी सैर करती हम सब मिलकर दौड़ लगाती।

दीदी सबको खूब हंसाती घर की
कभी नहीं याद दिलाती पढ़ना-लिखना खूब
~~सी~~ सिखती आगे बढ़ने की राह दिखाती !

मीता और रानी रोज सुबह
उठती तो कविता पढ़ते है धीरा

From Two Month Residential Camps of OoS Adolescent Girls

Organised by LOKMITRA

Feb 2013